दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी ।।
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु। बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ।।
मास दिवस महुँ नाथु न आवा। तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ।।
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना। तुम्हहू तात कहत अब जाना ।।
तोहि देखि सीतलि भइ छाती। पुनि कहुँ सोइ दिनु सो राती ।।

दो०-जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह।
चरन कमल सिरू नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह।। 27 ।।

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी। गर्भ स्त्रवहिं सुनि निसिचर नारी ।।
नाधि सिंधु एहि पारहि आवा। सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ।।
हरषे सब बिलोकि हनुमाना। नूतन जन्म कपिन्ह जब जाना ।।
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा। कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ।।
मिले सकल अति भए सुखारी। तलफत मीन पाव जिमि बारी ।।
चले हरषि रघुनायक पासा। पूँछत कहत नवल इतिहासा ।।
तब मधुबन भीतर सब आए। अंगद संमत मधु फल खाए ।।
रखवारे जब बरजन लागे। मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ।।

दो०-जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज।। 28 ।।

जौं न होति सीता सुधि पाई। मधुबन के फल सकहिं कि खाई ।।
एहि बिधि मन बिचार कर राजा। आइ गए कपि सहित समाजा ।।
आइ सबन्हि नावा पद सीसा। मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ।।
पूँछी कुसल कुसल पद देखी। राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ।।
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना। राखे सकल कपिन्ह के प्राना ।।
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ। कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ।।
राम कपिन्ह जब आवत देखा। किएँ काजु मन हरष बिसेषा ।।
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई। परे सकल कपि चरनन्हि जाई ।।

दो०-प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करूना पुंज।
पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज।। 29 ।।

जामवंत कह सुनु रघुराया। जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ।।
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ।।
सोइ बिजई बिनई गुन सागर। तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ।।
प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू ।।
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी। सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान